# माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

20 पृष्ठीय

वर्ष 2014

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

| परीक्षा का विषय | विषय कोड | परीक्षा का माध्यम |
|---|---|---|
| विशिष्ट हिन्दी | 0 0 1 | हिन्दी |

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

अंकों में परीक्षार्थी का रोल नम्बर

| 1 | 4 | 6 | 7 | 2 | 5 | 8 | 0 | 6 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

शब्दों में

| एक | चार | छः | सात | दो | पाँच | आठ | शून्य | छः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

उदाहरणार्थ

| 1 | 1 | 2 | 4 | 3 | 9 | 5 | 6 | 8 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक | एक | दो | चार | तीन | नौ | पांच | छः | आठ |

परीक्षार्थी / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

क — पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में 2 शब्दों में दो

ख — परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक हॉल

ग — परीक्षा का दिनांक 29 03 14

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

**HIGH SCHOOL CERTIFICATE EXAM- केन्द्र क्र. 672013**

| पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर | केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर |
|---|---|
| श्रीमती सीमा दुबे 29/03/14 | [signature] |

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई गई होलो क्राफ्ट स्टीकर ... नहीं पाया ... के अनुसार मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टि एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा ... का नाम की मुद्रा लगाएं

98

Mrs. M. Borkar (Principal)
Govt. H.S. Nadan Kheda Dhar
Reg.No. DH/TD/001/008

| उपमुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर ... | परीक्षक के हस्ताक्षर ... मुद्रा |
|---|---|
| डॉ. श्रीकांत द्विवेदी<br>पदनाम — प्रधानाध्यापक<br>V.S.No. 9286...<br>V.No. DH/TD/001/066 | नाम- श्रीमती ... पवार<br>पदनाम- ...<br>परीक्षक क्र. DH/TD/001/186<br>पदांकित संस्था का नाम -<br>शास. क. उ. मा. वि. धार |

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टि करें।

| प्रश्न क्रमांक | पृष्ठ क्रमांक | प्राप्तांक |
|---|---|---|
| 1 | | |
| 2 | | |
| 3 | | |
| 4 | | |
| 5 | | |
| 6 | | |
| 7 | | |
| 8 | | |
| 9 | | |
| 10 | | |
| 11 | | |
| 12 | | |
| 13 | | |
| 14 | | |
| 15 | | |
| 16 | | |
| 17 | | |
| 18 | | |
| 19 | | |
| 20 | | |
| 21 | | |
| 22 | | |
| 23 | | |
| 24 | | |
| 25 | | |

... शब्दों में

Laser/Inkjet/Copier Label A4ST-16 99.1x33.9mmx16

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र. 1

(i) पद्माकर रीतिकाल के प्रमुख कवियों में से हैं।

(ii) 'परम्परा बनाम आधुनिकता' विचारात्मक निबंध है।

(iii) नर्मदा के उत्स कुंड के थोड़ा-सा ऊपर चलने पर 'माई की बगिया है।

(iv) जिसके प्रति स्थाई भाव उत्पन्न हो वह आलंबन कहलाता है।

S

E (v) रसोईघर तत्पुरुष समास का उदाहरण है

प्रश्न क्र. 2 के उत्तर.

उत्तर (i) महादेवी वर्मा

उत्तर (ii) सुजान सिंह

उत्तर (iii) कहानी

उत्तर (iv) निः + रस

उत्तर (v) क्रोध

③ [ ] + [ 10] = [ ]

भाग पूर्ण पृष्ठ पृष्ठ 3 के अंक कुल

## प्रश्न क्र. 3 के उत्तर,

(i) सत्य

(ii) सत्य

(iii) सत्य

(iv) असत्य

(v) असत्य

## प्रश्न क्र. 4 (सही जोड़ी)

| 'अ' | | 'ब' (उत्तर) |
|---|---|---|
| (i) पृथ्वीराज रासो | ⇒ | महाकाव्य |
| (ii) उद्बोधन | ⇒ | रामधारी सिंह 'दिनकर' |
| (iii) सच्चा धर्म | ⇒ | सेठ गोविन्द दास |
| (iv) थके हुए कलाकार से | ⇒ | धर्मवीर भारती |
| (v) बेटियाँ पावन दुआएँ हैं | ⇒ | अजहर हाशमी |

④ [ ] + [ ] = [ ]

पृष्ठ 4 के अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 5 के उत्तर.

उत्तर (i) आक्रोश में आकर मजदूरों ने सूरज को निगल लिया।

उत्तर (ii) लोक संस्कृति का जन्म गाँवों मे हुआ।

उत्तर (iii) लालच को भूलकर या गँवाकर मनुष्य धनी बनता है।

उत्तर (iv) उपासना करने वाला उपासक कहलाता है।

उत्तर (v) "राम ! तुम नगर में रहो" यह आज्ञावाचक या आदेशात्मक वाक्य है।

प्रश्न क्र. 6 का उत्तर.

कुब्जा राजा कंस की दासी थी उसका कार्य प्रतिदिन राजा कंस के माथे पर चंदन का तिलक लगाना था। वह अत्य[...] कुरूप तथा कुबड़ी थी। जब कृष्ण अप[...] मामा कंस के बुलावे पर कंस के महल तक पहुँचे तो द्वार पर उन्हें कुब्जा मिली जिस[...] उन्हें चंदन का तिलक लगाया। तभी कृष्ण ने उसके कुब्ब पर हाथ रखा अपने पैर से [...]

(5) [ ] + [ ] = [ ]

उसके पैर को दबाकर एक झटका दिया जिससे वह सीधी व सुंदर हो गयी उसका उद्धार श्रीकृष्ण के द्वारा हुआ।

प्रश्न क्र. 7 का उत्तर.

बालक राम कभी तो खेलने के लिए चंद्रमा मांगते हैं, कभी फर्श या खंभे पर अपना प्रतिबिम्ब देखकर डर जाते हैं व कभी तो खुश होकर ताली दे-देकर नाचने लगते हैं और कभी किसी चीज की ज़िद पकड़कर बैठ जाते हैं। यदि वह चीज न मिले तो रुष्ठ हो जाते हैं। बालक राम की इन्हीं बालक सुलभ चेष्टाएँ देखकर माताएँ खुश हो रही हैं।

प्रश्न क्र. 8 का उत्तर.

जब मनु थक कर नदी के किनारे विश्राम करने के लिए मुँह नीचे किए बैठे थे तो तभी श्रद्धा ने आकर उनसे अपने मधुर स्वर में उनका परिचय जानना चाहा। उसकी (श्रद्धा की) भौरें के गुंजार के समान मीठी वाणी सुनकर मनु को हर्ष मिश्रित झटका सा लगा और वे उसकी तरफ मुड़कर देखने के लिए विवश हो। श्रद्धा का सुंदर रूप देखकर वे अचंभित हो गए।

6

प्रश्न क्र. 9 का अथवा का उत्तर

मानव जिस ओर गया वहाँ उसने सृजन किया उसने आकाश तथा वायु को अपना मित्र बनाया। पृथ्वी के भूगर्भ के खुदाई कर नए-नए खोजें की तथा आविष्कार किए मानव जिस ओर गया वहाँ उसने घर या मकान बनाए व उसने तीर्थस्थलों का निर्मा भी किया।

प्रश्न क्र. 10 का उत्तर,

खाली पेट कविता के माध्यम से कवि "अभिमन्यु अनंत" जी मानव नामक ईश्वर की की श्रेष्ठ कृति पर प्रश्न उठाते हुए कहते हैं कि हे ईश्वर! तुमने मनुष्य को खाली पेट दिया ठीक किया पर तुमने उसे फैलाने के लिए हाथ तथा टेकने के लिए घुटने क्यों दिए इन्हीं कारणों से आज मानव को भूख लगने पर असमर्थ होने का भीख मांगना पड़ता है।

प्रश्न क्र. 11 का उत्तर,

ललित कलाओं का ग्राम्य जीवन में बहुत महत्व है। गाँव का व्यक्ति ललित कलाओं के कारण ही मनोरंजन तथा रोजगार प्राप्त कर पाता है। ललित कलाओं के कारण गाँव जीवन रसपूर्ण व आनंदमयी बना रहता है

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र. 12 का अथवा का उत्तर

यदि देश के नागरिक सार्वजनिक स्थलों पर बैठकर यह बातें करते हैं कि हमारे देश में यह नहीं हो रहा, वह नहीं हो रहा तथा अपने देश की तुलना दूसरे देश से करते हैं और इस तुलना में अपने देश को निम्न तथा दूसरे देश को श्रेष्ठ मानते हैं तो हमारे देश के नागरिकों के इस तरह के व्यवहार से देश के मानसिक बल का ह्रास हो रहा है।

प्रश्न क्र. 13 का उत्तर.

वृत्तियों के उन्नयन से आशय वृत्तियों को कामनाओं के क्षेत्र से ऊपर उठाकर सूक्ष्म भावनाओं की ओर प्रवृत्त करने से है। मनुष्य की वृत्तियों को संतुष्ट रहना चाहिए वृत्तियों का उन्नयन अर्थात् छोटी-छोटी सी कामनाओं की पूर्ति के बारे में न सोचकर सूक्ष्म भावनाओं की ओर उन्मुख होने से है।

प्रश्न क्र. 14 का उत्तर.

कवि माखनलाल चतुर्वेदी देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए चाहते हैं कि देश के सभी नागरिक अपने अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों और स्वयं के महत्व को समझें तथा किसी न किसी सृजनात्मक कार्य में लगे रहें और अपने देश

निरंतर

की स्वतंत्रता की रक्षा करें।

प्रश्न क्र. 15 का उत्तर.

(1) आँखों का तारा - बहुत प्यारा

वाक्य → मोहन उसकी माताजी की आँखों का तारा है

(2) हाथ मारना - छुड़ा लेना

वाक्य → छोटे भाई ने बड़े भाई के हिस्से की आइस्क्रीम पर भी हाथ मार लिया।

B
S
E

प्रश्न क्र. 16 का उत्तर.

गीतिका छंद - मात्रिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 14-12 की यति पर 26 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण -
हे प्रभु आनंददाता, ज्ञान हमको दीजिए

शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिए।

लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बनें,

ब्रह्मचारी धर्मरक्षक, वीर व्रतधारी बनें।

प्रश्न क्र. 17 का अथवा का उत्तर.

लेखक "हरिशंकर परसाई" जी कहते हैं कि कुछ लोग बड़े ही निर्दोष मिथ्यावादी होते हैं अर्थात् वे अकारण ही मिथ्यावाचन करते हैं। उनके झूठ बोलने में उन्हें कुछ विचार करने की आवश्यकता नहीं होती। लेखक भी ऐसे ही एक व्यक्ति से मिले, उस व्यक्ति ने कहा - "मैं तो ट्रेन से उतरकर सीधे तुमसे मिलने चला आया" जैसे आत्मा का एक खंड दूसरे खंड से मिलने को आतुर हो जबकि लेखक को पता था कि वह कल का आया हुआ है। ऐसे लोग निष्प्रयास, निष्प्रयोजन ही झूठ बोलते हैं तथा इनके झूठ से किसी प्रकार हानि नहीं होती है इसलिए लेखक ने उन्हें "निर्दोष मिथ्यावादी" कहा है।

प्रश्न क्र. 18 का अथवा का उत्तर.

संधि और समास में अंतर नि. लि. है -

| क्र. | संधि | समास |
|---|---|---|
| (1) | दो वर्णों के मेल को संधि कहते हैं। | दो शब्दों के मेल से बने शब्द को समास कहते हैं। |
| (2) | दो वर्णों के मेल के कारण विकार उत्पन्न होता है। | दो शब्दों के मिलकर उनके योजक शब्दों का लोप हो जाता है। |
| (3) | संधि को तोड़ना विच्छेद कहलाता है। | समास को तोड़ना विग्रह कहलाता है। |

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र

प्रश्न क्र. 19 का उत्तर.

महाकाव्य व खंडकाव्य में अंतर नि. लि. है -

| | महाकाव्य | खंडकाव्य |
|---|---|---|
| (1) | महाकाव्यमेंसंपूर्ण जीवन वृत्त या घटना विशेष का सांगोपांग चित्रण या वर्णन होता है। | खंडकाव्य में नायक के जीवन के किसी एक खंड या ~~ह~~ हृदयस्पर्शी घटना का वर्णन होता है। |
| (2) | महाकाव्य में सभी छंदो का प्रयोग होता है। | खंडकाव्य में एक ही छंद का प्रयोग होता है। |
| (3) | महाकाव्य में श्रृंगार शांत तथा वीर रस में से किसी एक की प्रधानता होती है। | खंडकाव्य में श्रृंगार या करुण रस होता है। |
| | उदा. कामायनी (जयशंकर प्रसाद) | उदा. पंचवटी (मैथिलीशरण गुप्त) |

B
S
E

प्रश्न क्र. २० का उत्तर.

प्रगतिवादी युग का काल सन् 1936 से 1943 तक रहा।

विशेष-
इस काल में हमारी वैज्ञानिक प्रगति भी हुई तथा हमारे देश के सुविचार तथा कार्यों में भी प्रगति हुई।

प्रगतिवादी काव्यों की चार विशेषताएँ निम्न हैं-

(1) शोषितों के प्रति प्रेम तथा शोषकों का विरोध
(2) ईश्वर के प्रति अनास्था
(3) नारी के उत्थान की भावना
~~(4)~~ व समाज के वर्ग की समानता पर बल
4) सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार.

वर्णन

(1) शोषितों के प्रति प्रेम तथा शोषकों का विरोध -

इस युग में समाज के दो वर्ग हुए जिसमें अत्याचार सहने वालों के प्रति इस काल के कवियों ने स्नेह तथा अत्याचार करने वालों की नीति का विरोध अपनी कविताओं के माध्यम से किया है।

(२) ईश्वर के प्रति अनास्था - इस काल में अत्याचार बढ़ने, बुराइयों के बढ़ने

निरंतर

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

से भी कवियों व लोगों के मन में ईश्वर के प्रति अनास्था का भाव जागृत हुआ।

(3) नारी के उत्थान की भावना तथा समाज के वर्ग समानता पर बल–

इस युग के कवियों ने समाज में व्याप्त असमानताओं तथा नारी की बुरी स्थिति का वर्णन अपने रचनाओं में किया तथा समाज सुधार पर जोर दिया।

B (4) सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार.–

S इस युग में कवियों ने मुख्यतया

E सामाजिक कुरीतियों, अन्याय तथा शोषण के ऊपर प्रहार करने वाली कविताओं की रचना की।

प्रश्न क्र. 21 का उत्तर.

<u>निबंध</u> – निबंध शब्द का अर्थ ऐसी गद्य रचना से है जिसमें किसी विषय को एक सीमित आकार में बाँधकर वर्णन किया जाए।

"बाबू गुलाबराय" के अनुसार "निबंध वह गद्य रचना जिसमें किसी विषय का वर्णन एक सीमित आकृति में सजीवता, सौष्ठव, चित्रात्मकता, घनत्व, संस्मरणीयता, तथा रमणीय भावों के साथ किया जाता है।

(13) [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 13 के अंक

प्रश्न क्र. 22 का उत्तर.

साहित्यिक परिचय

रामवृक्ष बेनीपुरी

दो रचनाएँ – (1) गेहूँ और गुलाब (ललित निबंध)

(2) मील के पत्थर (संस्मरण)

भाषा – रामवृक्ष बेनीपुरी जी भाषा बेहद सरल, सुबोध, प्रवाहमय तथा बोधगम्य है। उन्होंने भाषा में तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी, उर्दू आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग भी किया है। बेनीपुरी जी ने भाषा में कठिन से कठिन बात को सरलता से व्यक्त करने के प्रतीकों का प्रयोग किया है। आपकी भाषा में वीर रस या ओज गुण का संचार करने वाले लोकोक्तियों तथा यथाउचित मुहावरों का भी प्रयोग है।

शैली – रामवृक्ष बेनीपुरी जी की शैली में विविधता दिखाई देती है –

(1) नाटकीय शैली – बेनीपुरी जी ने नाटक के पात्रों, चरित्र तथा घटना का सुलभ वर्णन हेतु इस शैली का प्रयोग किया है।

निरंतर

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र (2) भावात्मक शैली - अपने ललित निबंधों व अभिव्यक्ति भाव पूर्ण तरी से करने के लिए इस कवित्वपूर्ण भावात्मक शैली का प्रयोग किया।

(3) प्रतीकात्मक शैली - इन्होंने अपने रचनाओं लंबे - लंबे वाक्यों को सरल रूप में व्यक्त करने के लिए इस शैली का प्रयोग किया। इन्होंने ललित निबंध "गेहूँ और गुलाब" में इसका रमणीय प्रयोग किया है जैसे उन्होंने लिखा है कि - "गेहूँ रोए खेत में और गुलाब रोए बगीचों में अपने मालिक के, भाग्य पर दुर्भाग्य पर।

B
S
E

(4) चित्रोपन शैली - रामवृक्ष बेनीपुरी जी ने रेखाचित्र के भावों तथा अर्थों को स्पष्ट करने के लिए चित्रोपम शैली का प्रयोग किया है।

(5) विवेचनात्मक शैली - अपने चुने गए विषयों का विवेचन तथा आलोचना रचनाओं में इस शैली का प्रयोग किया गया है।

प्रसिद्ध निबंधकार, इतिहासकार, साहित्यकार, आलोचनाकार, कहानीकार आदि में आपका स्थान व योगदान स्मरणीय है।

(15)

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ क्र. के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र. 23 का उत्तर,

काव्यगत विशेषताएँ

~~दो रचनाएँ – महादेवी वर्मा~~

दो रचनाएँ –(1) यामा (इस कृति हेतु इन्हें ज्ञानपीठ पुरुस्कार मिला)

(2) स्मृति की रेखाएँ ~~(रेखाचित्र)~~

कलापक्ष

(1) भाषा – इनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है। शब्दचयन उच्चकोटि का है। दुर्लभ बातों को सहजता से कहने की सामर्थ्यता इनकी भाषा में है।

2) शैली – इनकी शैली मुक्तक काव्य शैली है। इनकी शैली में "गागर में सागर भरने" की क्षमता है।

3) अलंकार योजना – महादेवी जी ने अपनी रचनाओं में रूपक, यमक, श्लेष अतिश्योक्ति, अनुप्रास, मानवीकरण तथा प्रायः सभी अलंकारों का प्रयोग अनुपम ढंग से किया है।

4) छंदयोजना – इन्होंने अपनी रचनाओं में अलग-अलग प्रकार के पद्यों व छंदों का

निरंतर

प्रयोग किया है।

भावपक्ष -

(1) प्रेम भावना - महादेवी जी को आधुनिक युग की मीरा कहा जाता है
इनके काव्य में प्रेम की गहराई है।
जैसे - "मैं कण-कण में ढाल रही अलि आँसू के मिस प्यार किसी का॥"

B.
(2) विरह वेदना - महादेवी जी के काव्य में विरह और वेदना की
S
E अभिव्यक्ति प्रचुर मात्रा में की है।
जैसे - "मैं नीर भरी दुःख की बदली"

(3) रहस्यवाद - इन्होंने प्रकृति के कण-कण में रहस्यमयी सत्ता का अनुभव किया है।
इन्होंने लिखा है -
"कौन तुम मेरे हृदय में,
मैं बीन भी हूँ, मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ,
दूर तुमसे हूँ, अखंड सुहागिनी हूँ।"

(4) प्रकृति चित्रण - छायावादी कवि होने के नाते इन्होंने अपनी रचनाओं में
प्रकृति का चित्रण उद्दीपन के रूप में किया है।
आपके समान रसमयी कवियत्री अन्यत्र कहीं नहीं है।"

प्रश्न क्र. 24 का उत्तर.

ये - - - - - लहुलुहान है।

<u>संदर्भ</u>- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक "<u>नवनीत</u>" के "<u>वात्सल्य भाव</u>" के शीर्षक "<u>सोए हुए बच्चे से</u>" से ली गई है। इन पंक्तियों के रचनाकार "<u>हरिनारायण व्यास</u>" जी है।

<u>प्रसंग</u> - इन पंक्तियों में कवि ने अपने विचारों की कमियां व्यक्त की है।

<u>व्याख्या</u> - कवि हरिनारायण व्यास जी कहते है कि वे जब एक समझ की अवस्था में पहुँचे तो उनके विचारों में भी परिवर्तन हुआ। उनके विचार अब कोमल नहीं रहे बल्कि इस दुनिया के विचारों को समझते समझते पूरी तरह से चोटिल हो गए है। उनने सफलता प्राप्ति के लिए अपने आप के विचार तथा अंतर्द्वन्द्वों को इस प्रकार आगे बढ़ाया जैसेकि कोई नाव पहाड़ों से टकराती आगे बढ़ रही है। उनके मन पर कई चोटे है और अब उनके ख्याल ऐसे नहीं रह गए कि वे किसी को उन्हें दे सके।

<u>विशेष</u> - (1) विचारात्मक शैली का प्रयोग।
(2) उर्दू शब्दों का प्रयोग।
(3) करुण रस प्रधान।

निरंतर

BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

कठिन शब्दार्थ – (1) ख्याल – विचार
(2) दुनियादारी – सांसारिक बातें।
(3) कामयाबी – सफलता।
(4) लहूलुहान – रक्त से लथपथ

प्रश्न क्र. 25 का अथवा का उत्तर.

गाँवों – – – – – – – रखते हैं।

संदर्भ – प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक नवनीत के पाठ – "मेरे गाँव की सुख शांति किसने छीन ली ?" से उद्धृत है। इसके रचनाकार "रामनारायण उपाध्याय" हैं।

प्रसंग – इस पद्यांश से लेखक गाँव का परिदृश्य प्रस्तुत कर रहे हैं।

व्याख्या – लेखक कहते हैं कि गाँव में रहने वाले लोगों से हम जो कुछ सीख सकते हैं वह हम किसी किताब में पढ़कर या दूरदर्शन पर देखकर नहीं सीख सकते हैं। गाँव के व्यक्ति भी इसी बात की राह देखते हैं कि उनके क्रिया-कलापों से भी कोई कुछ सीखें। संस्कृति का जन्म गाँवों में हुआ परंतु इसे शहर तक पहुँचाने में केवल गाँवों का प्रयास रहा है। उनका जीवन सभी के लिए खुली किताब

निरंतर

की तरह है परंतु इस किताब का एक पन्ना भी नहीं उलटा गया। गाँवों के रहन-सहन, खान-पान, वस्त्र आभूषण, आचार-विचार रीतिरिवाज, विश्वास और मान्यताएँ गीत और नृत्य, संगीत हमें हमारी संस्कृति के बारे में किसी न किसी तरह की शिक्षा देते हैं।

विशेष - (1) गाँव के परिवेश से अवगत कराया।
(2) लोक संस्कृति की विशेषता से परिचय।
(3) वर्णनात्म शैली।

कठिन शब्दार्थ - (1) बाट जोहना - रास्ता देखना / इंतजार करना।
(2) समग्र - सारा / संपूर्ण
(3) क्षमता - सामर्थ्यता
(4) मान्यताएँ - परंपराएँ।

प्रश्न क्र. 26 के उत्तर.

उत्तर (i) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक "मानवता का आदर" है।

उत्तर (ii) यथार्थ मनुष्य वही है जो मानवता का आदर करना जानता है, कर सकता है।

उत्तर (iii) सारांश - मानवता का आदर करने वाला यथार्थ मनुष्य होता है। मानव बुद्धिहीन तब होता है जब वह दरिद्र व्यक्ति की उपेक्षा कर देता है। परंतु सभी मानव सम्मान योग्य है तथा ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र

प्रश्न क. 27 का उत्तर.

स्थानान्तरण प्रमाण पत्र हेतु आवेदन पत्र

सेवा में,
श्रीमान प्राचार्य महोदय
सरस्वती उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
इटारसी (म.प्र.)

विषय - स्थानान्तरण प्रमाण पत्र प्राप्ति हेतु आवेदन पत्र।

B S E

महोदयजी,

विनम्र निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा दशम की छात्रा हूँ। मेरे पिता शिक्षक हैं। उनका स्थानान्तरण भोपाल हो गया है। मेरा परिवार वहीं जा रहा है। मैं यहाँ अकेली रहकर अध्ययन नहीं कर सकती अतः उनकी साथ जाना चाहती हूँ। मैंने विद्यालय की समस्त शुल्क व सामग्री दे दी है। अतः आप मुझे मेरा स्थानान्तरण प्रमाण पत्र शीघ्र अतिशीघ्र देने की कृपा करें ताकि मैं सही समय पर भोपाल के विद्यालय में प्रवेश ले सकूँ।

धन्यवाद
आपकी आज्ञाकारी शिष्या
अ, ब, स
कक्षा - दशम
दिनांक - 29-3-14

परीक्षा का विषय: वि. हिन्दी    0 0 1 हिन्दी



स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

परीक्षार्थी द्वारा भरा जाये →

[redacted]

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

केन्द्र क्र. 672013

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

श्रीमती सीमा दुबे
29/03/14

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

B
S
E

प्रश्न क्र. 28 का (ब) का उत्तर.

## कम्प्यूटर : आज की आवश्यकता

रूपरेखा -
(1) प्रस्तावना
(2) कम्प्यूटर का आविष्कार
(3) कम्प्यूटर क्या है ?
(4) इसका प्रयोग
(5) उपसंहार.

वर्णन -

(1) प्रस्तावना - कम्प्यूटर विज्ञान की एक महान देन है जो निरंतर प्रगतिशील व प्रगति में सहायक है।

(2) कम्प्यूटर का आविष्कार - आधुनिक कम्प्यूटर के आविष्कार का श्रेय इंग्लैण्ड के

पृष्ठ को आगे पलटें

प्रश्न क्र. वैज्ञानिक चार्ल्स बैबेज को जाता है।

(3) कम्प्यूटर क्या है? – कम्प्यूटर गणितीय समस्याओं को तेजी से सुलझाने व कई स्मृतियों सहेज कर रखने का यंत्र है।

(4) इसका उपयोग – इसका उपयोग चिकित्सा, शिक्षा, खेल, बैंक आदि हर क्षेत्र में होता है।

(5) उपसंहार – भारत ने अपनी प्रगति के लिए कम्प्यूटर के क्षेत्र में प्रगति की तथा नए-नए प्रकार के कम्प्यूटर का आविष्कार किया।

B
S
E

प्रश्न क्र. २४ का (अ) का उत्तर.

# पर्यावरण प्रदूषण

रूपरेखा - (1) प्रस्तावना
(2) पर्यावरण और मानव
(3) पर्यावरण प्रदूषण के कारण
(4) पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार
(5) प्रदूषण दूर करने के उपाय
(6) उपसंहार.

प्रस्तावना - प्राचीन काल से हमारी सभ्यता पर्यावरण पर आधारित रही है। पर्यावरण ने हमें बालक से युवा बनने में सहायता की तथा सभी प्रकार की सुविधाएँ प्रदान की। पर्यावरण शब्द का अर्थ है परि अर्थात चारों ओर आवरण अर्थात घेरे हुए अतः पर्यावरण शब्द का अर्थ है हमारे चारों ओर का घेरा जिसके अंतर्गत सभी जैविक तथा अजैविक घटक आते हैं।

" प्राचीन काल से आज तक
मानव का किया उद्धार,
ईश्वर ने हमें दिया है
पर्यावरण नामक सर्वोत्तम उपहार।"

पर्यावरण और मानव एक दूसरे के सहकर्मी व सहधर्मी है।

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र (2) पर्यावरण और मानव - पर्यावरण और मानव का संबंध जन्म-जन्मांतर का है। पर्यावरण और मानव जैसे एक सिक्के के दो पहलु हैं। यदि पर्यावरण न हो तो मानव की उत्पत्ति या निवास की कल्पना करना कठिन है और यदि मानव जहाँ न हो वहाँ पर्यावरण भी नहीं होगा। पर्यावरण में सभी जीवों से कुछ-न-कुछ लेते हैं तथा कुछ-न-कुछ देते हैं। पर्यावरण में मानव समाज का संचालन परस्पर सहयोग से करता है। इसके मुख्य तत्वों में पंचभूत तत्व हैं तथा अजैविक घटक

B S E

(3) पर्यावरण प्रदूषण - प्राचीन काल में मनुष्य पर्यावरण व प्रकृति की गोद में खेला प्रगति की ज्ञान प्राप्त किया परंतु आज मानव भौतिकतावादी हो गया है। अब वह सभी प्रकार से सुविधा संपन्न बनना चा रहा है जिसके लिए निरंतर किसी न किसी तरह प्रकृति को नुकसान पहुँचा रहा है। यदि पर्यावरण नाश इसी तरह होता रहा तो मानव का जीवन स्वयं संकट में होगा।

पर्यावरण प्रदूषण का आशय - पर्यावरण की प्राकृतिक संरचना व संतुलन में होने वाला कोई भी अवांछनीय परिवर्तन जिससे उसकी गुणवत्ता में कमी आए "पर्यावरण प्रदूषण" कहलाता है।

(2)

4 पृष्ठीय

माध्यमिक [शिक्षा मण्ड]ल, मध्यप्रदेश, भोपाल

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓ | परीक्षा का माध्यम: हिन्दी | परीक्षा का दिनांक: 29 03 14

परीक्षा का विषय: वि० हिन्दी | विषय कोड: 0 0 1

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

CERTIFICATE EXAM-

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

श्रीमती सम्पदे

29/03/14

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

पर्यावरण प्रदूषण के कई कारण हैं परंतु इसका सबसे मुख्य कारण मानवीय क्रियाकलाप है। पर्यावरण प्रदूषण में औद्योगिक प्रगति भी सहायक सिद्ध हुई है।

(4) पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार - पर्यावरण प्रदूषण मुख्यत: 4 प्रकार का होता है - जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण।

जल प्रदूषण - जल के भौतिक तथा रासायनिक गुणों में होने वाली कोई भी अवांछनीय परिवर्तन जल प्रदूषण कहलाता है। जल प्रदूषण के कारण जलीय जीव नष्ट हो जाते हैं तथा मानव को उदर विकार हो जाते हैं।

B
S
E

पृष्ठ के अंकों का योग

निरंतर

② [ ८ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व ... पृष्ठ 2 के अंक ... कुल ...

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

इसके अलावा वायु में गैसो का अनुपात बिगड़ने से वायु प्रदूषण, मृदा के तत्वों के नष्ट होने से मृदा प्रदूषण तथा ध्वनि या शोर अधिक होने से ध्वनि प्रदूषण होता है।

"सभी प्रकार के प्रदूषण मानव जीवन की कल्पना से अधिक घातक हैं।"

(5) प्रदूषण दूर करने के उपाय- प्रदूषण के प्रकारों के हिसाब से उनके दूर करने के उपाय भी अलग हैं।

B
S
E

(i) जल प्रदूषण- कारखानों से निकलने वाले प्रदूषण युक्त जल को नदियों में न मिलाएँ, वृक्षारोपण करके जल को भूमिग[त] का प्रयास करें।

(ii) वायु प्रदूषण- कारखानों की चिमनियाँ ऊँची बनाकर, उद्योगों के चारों ओर अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर वायु प्रदूषण को कम किया जा सकता है। प्रदूषित कचरा या पॉलीथीन को न जला[कर] भी इसे कम कर सकते हैं।

(iii) मृदा प्रदूषण- मृदा में प्रदूषित पदार्थों को दबाने, पॉलीथीन डालने, उर्वरक कीटनाशक आदि का छिड़काव से मृदा प्रदूषण होता है यदि ये कार्य न हो तो इस प्रदूषण को कम किया जा सकता है।

(निरं...

3

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUC

v) ध्वनि प्रदूषण - कारखानों की मशीनों का समय- समय रखरखाव से भी यह प्रदूषण कम किया जा सकता है।

(6) उपसंहार - पर्यावरण प्रदूषण हमारे देश तथा मानव जीवन के सामने एक विकट समस्या बनकर खड़ा है। गांधी जी ने कहा है कि "हम आकाश में उड़ना सीख गए, जल में तैरना परंतु पृथ्वी पर कैसे चलना है यह नहीं सीख पाए"। हमें यदि हमारी संस्कृति तथा भविष्य को बचाना है तो अधिक से अधिक वृक्षारोपण कर प्रदूषण रोकना होगा। इसके लिए कई सरकारी प्रयास निरंतर किए जा रहे हैं।